विपश्यना

साधकों का
मासिक प्रेरणा पत्र

वार्षिक शुल्क रु. ३०/-
आजीवन शुल्क रु. ५००/-

बुद्धवर्ष 2561, मार्गशीर्ष पूर्णिमा 3 दिसंबर, 2017, वर्ष 47, अंक 6

For online Patrika in various languages, visit: http://www.vridhamma.org/Newsletter_Home.aspx

धम्मवाणी

नगरं यथा पच्चन्तं, गुत्तं सन्तरबाहिरं।
एवं गोपेथ अत्तानं, खणो वो मा उपच्चगा।
खणातीता हि सोचन्ति, निरयम्हि समप्पिता॥

धम्मपदपाळि- ३१५, निरयवग्गो

जैसे (कोई) सीमावर्ती नगर भीतर-बाहर से (खूब) रक्षित होता है, वैसे ही अपने आपको रक्षित रखे। क्षण भर भी न चूके, क्योंकि क्षण भर को चूके हुए लोग नरक में पड़ कर शोक करते हैं।

अभी ही समय है

-- भदंत वेबू सयाडो

(भदंत वेबू सयाडो द्वारा सयाजी ऊ बा खिन और अपने शिष्यों को दिये गये प्रवचन के कुछ अंश):--

वेबू सयाडो: दकाजियो और दकामाजियो (सज्जनो और सन्नारियो) !

आपको अपने मन को विमुत्ति (विमुक्ति) के ऋजु मार्ग पर स्थिर करना चाहिए और **सोवचस्सता**गुण (भगवान बुद्ध के उपदेशों के प्रति ग्रहणशीलता) को धारण करने के लिए प्रयासरत होना चाहिए। भगवान बुद्ध के अद्वितीय शासन के प्रति अपना सम्मान प्रकट करते हुए भिक्षुओं का आदर-सत्कार करके उन्हें दान देना है-- इस तरह पुण्य कमाने के बाद अपने मंगल की कामना इस प्रकार करनी है, ''मैं बोधिञाण (बोधिज्ञान) प्राप्त करके निब्बान (निर्वाण) का साक्षात्कार करूं।''

जो मैंने 'बोधि' कहा है, उसका अर्थ है-- चार आर्य सत्यों को भली प्रकार समझ लेना। बोधि तीन प्रकार की होती है:-

1. सम्मा सम्बोधि (सम्यक संबोधि)
2. पच्चेक बोधि (प्रत्येक बोधि)
3. सावक बोधि (श्रावक यानी, शिष्य बोधि)

अपने मंगल की कामना करने का अर्थ है इनमें से एक बोधि प्राप्त करने के लिए दृढ़ निश्चय करना। गहराई में जायँ तो 'सावक बोधि' के भी तीन प्रकार हैं:--

1. अग्ग सावक बोधि (अग्र श्रावक बोधि)
2. महा सावक बोधि (महा श्रावक बोधि)
3. पकति सावक बोधि (प्रकृत यानी, साधारण श्रावक बोधि)

तो इस अद्वितीय शासन में आपके लिए कई मार्ग हैं और कई लक्ष्य। आप अपनी इच्छा के अनुसार मनचाहा लक्ष्य प्राप्त कर सकते हैं।

कई महानुभावों ने इन मार्गों पर चल कर संबोधि प्राप्त की थी। उनकी मनोकामनाएं क्यों पूरी हुईं? क्योंकि समय सम्यक था, स्थान सम्यक था और उनका प्रयत्न सम्यक था।

भगवान बुद्ध के संबोधि प्राप्त करने के बाद से लेकर कई देव और मनुष्य उनके पास गये, वंदना की और उनका धर्मोपदेश सुना। तब से जो-जो भी बुद्ध के उपदेशों को जान कर उनके अनुसार चले और सम्यक प्रयत्न किये, उन्होंने अपनी आकांक्षाओं को पा लिया।

वे न उनकी भव्य मूर्ति को देख कर संतृप्त हुए थे और न ही उनके शुद्ध धर्म को सुनने मात्र से। बल्कि अटूट श्रद्धा पैदा होने और अच्छी तरह समझने के बाद ही उन्होंने 'धम्म' में प्रवेश किया और उसकी शरण ली। करुणानिधि बुद्ध ने उनके लिए सत्य का वर्णन किया। जिस सत्य का उन्होंने स्वयं दर्शन किया था, उसे जानने का मार्ग प्रशस्त किया। लोगों ने जैसे ही बुद्ध के उपदेशों को समझा, उनका अनुसरण किया और शरीर की चारों अवस्थाओं में (लेटना, बैठना, खड़े रहना और चलना) बिना थके, कठिन प्रयत्न के साथ 'धम्म' की साधना की। इस प्रकार दुर्गुणों को मिटा कर, सद्गुणों का समुपार्जन करने हेतु बिना थके, बिना दुःख अनुभव किये, निरंतरता से साधना करना ही सम्यक व्यायाम (सम्यक प्रयत्न) है।

जब कोई धर्मनिष्ठ व्यक्ति अपनी कठिन साधना से अपने सम्यक मनोरथ (चुनाव) को सिद्ध करता है, तब वह पूर्ण आनंद में स्थित होता है। दुर्गुणों से मुक्त यह सच्चा आनंद, जन्म-जन्मांतर के समस्त दुःखों को पार कर चुका है। यही मुक्ति (या स्वतंत्रता) का आनंद है। इसको प्राप्त किये व्यक्ति कभी ईर्ष्यालु या लोभी नहीं होते, इसलिए वे अपने परमसुख को हमेशा दूसरों से बांटते हैं। पुण्य-वितरण उनका कर्तव्य है। इस प्रकार खुश होना अच्छी बात है।

इसलिए अच्छे लोगों को आनंदित करने और सभी प्राणियों की खुशी के लिए आप सबको बुद्ध-वाणी हृदयंगम करना होगा और सबको बांटना होगा। आप उपासक लोग भिक्षुओं को जरूरी चीजें देकर 'धम्म' की सहायता करते हैं और भिक्षु 'धम्म' देकर लोगों की सहायता करते हैं। कितना अच्छा, कितना आनंददायक!

जो सम्यक प्रयत्न करता है और लगन से साधना करता है, जिसमें श्रद्धा है, जिसे आवश्यक सामग्री उदारतापूर्वक दी जाती है, जिसमें 'सोवचस्सतागुण' ('धम्म' के प्रति ग्रहणशीलता) है, उसे लाभ मिलता ही है। यही बुद्ध की शिक्षा का महा प्रभाव है।

इस तरह भगवान के समय से लेकर आज तक सम्यक आकांक्षा, सम्यक प्रयत्न और अतीव श्रद्धा संपन्न भले लोगों ने बुद्ध शासन के प्रति कर्तव्यों को निभाया है। इस प्रकार एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक 'धम्म' को खुशी से पहुँचाते रहना सराहनीय और खुशी की बात है। समय और स्थान के सम्यक होने पर जब कोई सत्पुरुष उपदेश देता है तब उसका लाभ उठाने का यह सर्वोत्तम अवसर है।

जब भगवान ने धर्मचारिका करते हुए धर्मोपदेश देना प्रारंभ किया तब मगध पर शासन करने वाले नरेश बिंबिसार ने प्रज्ञा, सच्चा सुख यानी, मुक्ति-सुख का अनुभव किया। अतः विवेकयुक्त श्रद्धा के साथ

संघ के लिए राजगृह में वेळुवन का दान किया। भगवान ने वहां देव और मनुष्य जैसे विभिन्न प्राणियों के लिए अलग-अलग प्रवचन दिये। तब से लेकर आज तक अनगिनत प्राणी वास्तविक सुख-शांति को प्राप्त करते आ रहे हैं।

-- भगवान का 'धम्म' क्या है?

सयाजी: तिपिटक के उपदेश हैं, भंते!(भंते=सम्मानसूचक शब्द)

-- वे कौन से हैं?

सयाजी: 'सुत्त' (प्रवचन), 'विनय' (भिक्षुओं के अनुशासन के नियम) और 'अभिधम्म' (घर्म की गंभीर व्याख्या), भंते!

-- हां, ये सब पढ़ाई के लिए हैं, परंतु जब कोई इनको सार-सहित जान लेता है तब वह 'शील' (शील-सदाचार), 'समाधि' (ध्यान) और प्रज्ञा (विवेक) को प्राप्त करता है।

-- यह किसलिए है?

सयाजी: यह अनुसरण करने, ग्रहण करने और अभ्यास करने के लिए है, भंते!

-- जब कोई उनका अनुसरण करके पालन करता है तब वह क्या पा सकता है?

सयाजी: वह सच्चा सुख, सच्ची शांति और निर्वाण पा सकता है, भंते!

-- वे लाभ उसे इसी जन्म में मिलेंगे कि बाद में?

सयाजी: यहीं और इसी समय भंते! देर नहीं होगी।

-- हां, इसीलिए कहते हैं-- संदिट्ठिक, अकालिक 'धम्म' का स्वभाव खुद जानने जैसा है; बिना देर किये; अभी, यहीं। वाह, लाजवाब है! अद्भुत है!

-- तिपिटक में कितने प्रकार के 'धम्म' (विशेषताएं) हैं?

सयाजी: तीन, भंते! सुत्त, विनय और अभिधम्म।

-- और फिर पटिपत्ति (साधना) में कितने प्रकार के हैं?

सयाजी: शील, समाधि और प्रज्ञा, भंते!

-- पटिपत्ति और पटिवेधन (प्रतिवेधन- गहराई में छुपे क्लेशों का बेधन करना) में कितने?

सयाजी: 'मग्ग' (मार्ग), 'फल' (फल) और 'निब्बान' (निर्वाण); तीन भंते!

-- यद्यपि संख्या में 'धम्म' बहुत हैं तथापि मुक्ति का गुण एक है- 'विमुत्ति' (विमुक्ति)। वैसे ही साधना में भी एक ही अनुपम मार्ग है- 'सति' (स्मृति- जागरूकता)। इसलिए जिन देवों या मनुष्यों ने भी अनुपम मार्ग का अनुसरण किया है, उन्होंने इस बेजोड़ अनुपम धर्म- 'विमुक्ति' को पाया है। यही निर्वाण है।

यही बुद्ध द्वारा बताया गया 'एकायनो धम्मो' (एकमात्र धर्म) है। विश्लेषणात्मक विवरणों में तो अनगिनत 'धम्म' हैं, अगर आप इनमें से एक को भी सीख लें तो पालन करने के लिए वह पर्याप्त है।

दुःखचक्र से मुक्ति चाहने वाले व्यक्ति के लिए आवश्यक गुण हैं-- ग्रहणशीलता और सौम्यता (सोवचस्सतागुण), प्रबल वीर्य (आरद्ध वीरिय) और कुशाग्र विवेक (पटिविद्ध पञ्ञा), जिसमें ये सब गुण हैं; वह जन्म-मरण के चक्र से अवश्य छूट जायगा।

इसीलिए आपको बुद्ध शासन में बताये गये शास्ता के उपदेशों को अच्छी तरह ग्रहण कर लेना चाहिए। आपने 'धम्म' को अच्छी तरह समझ लिया हो, तो अपने ध्यान को शरीर पर स्थित करना चाहिए। आपको चाहिए कि अपने चित्त को शरीर पर केंद्रित कर स्थिर करें, ताकि मन को काबू में रहना सिखायें।

-- मन को एकाग्र करना क्या है?

सयाजी: 'सति' (स्मृति) है।

-- मन को स्थिर रखना क्या है?

सयाजी: 'समाधि' (ध्यान) है।

-- मन को शिक्षित करना क्या है?

सयाजी: वीर्य (प्रयत्न, दृढ़ पराक्रम) है।

-- मन को वश में करना क्या है?

सयाजी: प्रज्ञा (विवेक) है, भंते!

''वाह, दकाजी!'' (श्रीमान) साधु, साधु, बहुत अच्छा, बिल्कुल ठीक। कैसा है यह? अत्युत्तम! अद्भुत!

सयाजी: जी हां, भन्ते! (ऐसा ही है)। यही सर्वश्रेष्ठ शासन का चमत्कार है।

-- सुनने-पढ़ने सीखने वाला ज्ञान बहुत है। बहुत! लेकिन इसका हृदयंगम होना आवश्यक है। इसके लिए यह आवश्यक है कि श्रुत ज्ञान (*सुतमया पञ्ञा*), क्लेशों (दुष्कर्म) के संचय को बींधने वाले अनुभूतिमय ज्ञान (*भावनामया पञ्ञा*) में परिणत हो। केवल यह सूक्ष्म-भेदी ज्ञान ही आपको मुक्त कर सकता है। है न?

सयाजी: जी हां, भंते!

-- हां, यही एक सही गुण है। जब यह सूक्ष्म-भेदी गुण किसी के मन में स्थिर हो जाता है तब लोभ, क्रोध, मोह, दुःख, दौर्मनस्य आदि उसमें नहीं रह सकते और वह सच्चे सुख और शांति का आनंद पाता है। यह बहुत अच्छा है। है न?

सयाजी: जी हां, पूज्य भंते!

-- तो इच्छा की अनुपस्थिति को ही सुख कहते हैं। द्वेष की अनुपस्थिति को ही सुख कहते हैं। मोह की अनुपस्थिति को ही ज्ञान कहते हैं। ये सभी लाभ इसी जन्म में प्राप्त होते हैं। इन लाभों को बढ़ाने में देर मत कीजिए! 'असोक' (शोक रहित), 'विराग' (तृष्णा रहित); यही सच्चा सुख है, शांति है, दुःख-निरोध यानी, निर्वाण है।

इन क्लेशों से मुक्त होने की आपकी प्रबल इच्छा ही ऋद्धि (शक्ति) पाने का मार्ग (छंद इद्धिपाद) है। अगर आप इस प्रबल इच्छा कोआधार बनायँगे तो आपके प्रयत्न दृढ़ होंगे। यही 'विरिय इद्धिपाद' (ऋद्धि पाने का मार्ग, वीर्य) है। इससे मन दृढ़, स्थिर, सरल और एकाग्र होगा। इसे 'चित्त इद्धिपाद' (ऋद्धि पाने का मार्ग, चित्त-इद्धिपाद) कहते हैं। जब ये तीन-- इच्छा, प्रयत्न और चित्त-- दृढ़, एकाग्र और वीर्य संपन्न होंगे, तब विवेक, अन्वेक्षण और पूर्ण ज्ञान प्राप्त होगा। इस ज्ञान को ऋद्धि का मार्ग (विमंस इद्धिपाद) कहते हैं।

इस तरह भगवान बुद्ध ने प्रतिपादन किया था; **'केवलं परिपुण्णं सत्थुसासनं'** (सारा शासन अपने आपमें पूर्ण है।) क्या इस तरह यह परिपूर्ण है?

सयाजी: यह सचमुच हर करणीय कार्य से परिपूर्ण है, भंते!

-- जिसने सभी करणीयों को पूरा किया है, उसने सुख को अभी और यहीं पा लिया है, बिना विलंब के। यही वह अनुपम सुख है जिसमें उलझे हुए और दुःख देने वाले क्लेश (पाप) एक भी न बचे, सभी नष्ट हो गये। ध्यानी में दृढ़ता के साथ स्थित हुआ यह सुख न कभी अपसरण (पीछे

हटना) करता है और न ही बदलता है। आपको इस अलौकिक सुख को नमन करना है, इसकी बहुत कदर करनी है।

इंद्रिय भोग से प्राप्त होने वाले लौकिक सुख में कई उलझनें, परेशानियां, अवरोध, शत्रुताएं और दुःख आदि हैं। है न?

सयाजी: जी हां, भंते!

-- मनुष्य-सुख, राज-सुख, देव-सुख और इंद्र-सुख इन सबको उदाहरण के रूप में लें। ये सुख नाम और पदवी के अतिरिक्त और कुछ नहीं। ये सब खोखले हैं; इनमें कुछ सार नहीं। जब कोई इन्हें भोगते हैं तो कैसे भोगते हैं?

सयाजी: वेदना के द्वारा, भंते!

-- हां, इसलिए इन्हें अनुभूत होने वाले (वेदयित सुख) कहते हैं। इंद्रिय सुख हमेशा 'विपरिणामी' (बदलते रहने वाला) और 'अनिच्च' (अनित्य) होता है। जब मनुष्य और देव इन लौकिक सुख-वेदनाओं को भोगते हैं तो इनमें क्लेश (पाप) छिपे हैं या नहीं?

सयाजी: भंते, जब वे इंद्रिय सुख का आनंद लेते हैं तो उस अनुभूति में लोभ, तृष्णा, हवस अवश्य छिपे हैं।

-- मान लो ये इंद्रिय-सुख भोगने वाले पांच शत्रुओं (अग्नि, जल, दुष्ट राजा, चोर, मूर्ख) से डरते हों, या पुराने पुण्यों का संचय खाली होने के कारण उनको उस सुख से हाथ धोना पड़ा हो, या जीवनकाल पूर्ण हो जाने के कारण मृत्यु के करीब हो गये हों-- ऐसे अवसर पर वे इंद्रिय भोगों का सुख कैसे ले पायेंगे?

सयाजी: ऐसे अवसर पर इंद्रिय सुखों का आनंद नहीं ले पायँगे। अवश्य ही वे शोक, परिदेव, दुःख, दौर्मनस्य का अनुभव करेंगे।

-- इस समय किस प्रकार के क्लेश (दुर्गुण) उनकी दुःख-वेदनाओं में प्रसुप्त रहेंगे?

सयाजी: भंते, उनकी दुःख-वेदनाओं में क्रोध और द्वेष प्रसुप्त रहेंगे।

-- तो सुख वेदना का सुख क्षणिक है, बहुत कम समय के लिए है। यह सतत परिवर्तनशील है। इसमें कोई मौलिक तत्त्व नहीं है। शांति-सुख (संति-सुख) कभी बदलता नहीं, परिवर्तनशील नहीं। यह शाश्वत है। क्यों? क्योंकि 'संति-सुख' में कोई क्लेश नहीं है। यह सभी दुःखों की जड़, क्लेशों को बिना अपवाद के उखाड़ फेंकता है। यही दुःख का निरोध है। ये ही 'धम्म' के लाभ हैं।

इसलिए, हे उपासक, उपासिकाओ (गृहस्थ और गृहिणियो)! इसी समय जब आपको शास्ता के अद्वितीय शासन का लाभ उठाने का अवसर मिल रहा है, आप प्रबल आकांक्षा के साथ, सम्यक प्रयत्न के साथ, सजगता के साथ, इस शांति-सुख को **अभी 'इसी समय'** अविलंब प्राप्त करने के लिए जोर लगा कर साधना करें, लगन से प्रयास करें।

आप सबको शांति मिले! सब का मंगल हो!!

(श्रोतागण): साधु! साधु! साधु!!

(बर्मी भाषा से आंग्ल भाषा में इस प्रवचन का **अनुवाद** *भदंत ञाणीसार (सगाईं, म्यंमा) द्वारा विपश्यना विशोधन विन्यास के लिए 'धम्मगिरि' पर रहते हुए अक्टूबर, 1991 में किया गया था। अब उसका हिंदी अनुवाद प्रस्तुत है।)*

(सयाजी ऊ बा खिन जर्नल (हिंदी) से साभार)

पगोडा के समीप 'धम्मालय' अतिथि-गृह में निवास-सुविधा

पवित्र बुद्ध-धातुओं और बोधिवृक्ष के सान्निध्य में रह कर गंभीर साधना करने के इच्छुक साधकों के लिए **'धम्मालय' अतिथि-गृह** में निवास, भोजन, नाश्ता आदि की उत्तम सुविधा उपलब्ध है। अधिक जानकारी और बुकिंग के लिए निम्न पते पर **संपर्क** करें— श्री महेश मोदी, फोन- 022-62427599, 8291894645 एवं ईमेल— info.dhammalaya@globalpagoda.org

आगामी 14 जनवरी के एक-दिवसीय महाशिविर के समय **50% की विशेष छूट** दी जा रही है। जो भी साधक चाहें वे 13 से 15 जनवरी तक (तीन दिन के लिए) इस सुविधा का लाभ ले सकते हैं। संभवतः अन्य महाशिविरों के समय भी यह सुविधा उपलब्ध हो सकेगी।

वृहत् आंकिक संरक्षणालय केंद्र

विश्व विपश्यना पगोडा परिसर में एक बड़े आंकिक अभिलेखागार या संरक्षणालय केंद्र (Digital Archives Center) की योजना पर काम चल रहा है। इसके लिए अनेक कम्प्युटर, स्कैनर, प्रिंटर तथा सभी प्रकार के सामान रखने हेतु समुचित स्थान आदि पर प्रारंभिक खर्च पच्चीस लाख, तथा परियोजना-संचालन हेतु कार्यकर्ताओं के वेतनादि के लिए लगभग 15-20 लाख वार्षिक खर्च का अनुमान है।

"विपश्यना विशोधन विन्यास" का रजिस्ट्रेशन सेक्शन 35 (1) (3) के अंतर्गत हुआ है, जिससे दानदाताओं को 125 प्रतिशत आयकर की छूट प्राप्त होगी। जो भी साधक-साधिका इस पुण्य में भागीदार बनना चाहें वे निम्न पते पर संपर्क कर सकते हैं-- 1. Mr. Derik Pegado, 9921227057. or 2.Sri Bipin Mehta, Mo. 9920052156, A/c. Office: 022-62427512/ 62427510; Email: audits@globalpagoda.org; Bank Details of VRI -- 'Vipassana Research Institute', Axis Bank Ltd., Sonimur Apartments, Timber Estate, Malad (W), Mumbai - 400064, Branch - Malad (W). Bank A/c No. - 911010004132846; IFSC No.- UTIB0000062; Swift code: AXISINBB062.

दैनिक जीवन में अभिधम्म

मुंबई विश्वविद्यालय की सम्बद्धता के अधीन 'विपश्यना विशोधन विन्यास' (VRI) द्वारा **"दैनिक जीवन में अभिधम्म"** लघु कोर्स, सप्ताह में एक दिन (हर शनिवार) संचालित किया जायगा। अपने फॉर्म ई-मेल या पोस्ट द्वारा नीचे दिए गये पते पर ३० दिसंबर २०१८ तक भेज सकते हैं। **अवधि:** ६ जनवरी २०१८ से २४ मार्च २०१८ (३ महीने). **समय:** दोपहर १:०० से ४:०० बजे तक. **शैक्षणिक योग्यता:** HSC/Old SSC प्रमाणपत्र और एक फोटो साथ भेजें।

तथा प्राथमिक पालि अभ्यास कार्यक्रम

दि. 7 अप्रैल से 22 मई, 2018, योग्यता-- कम-से-कम तीन 10-दिवसीय शिविर, एक सतिपट्ठान शिविर तथा आचार्य की अनुमति के अतिरिक्त 12वीं कक्षा पास होना चाहिए। **दोनों के लिए** -- आवेदन-पत्र हेतु लिंक देखें- http://www.vridhamma.org/Theory-And-Practice-Courses. अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें -Email: Mumbai@vridhamma.org **स्थान:** Vipassana Research Institute, Pariyatti Bhavan, Global Vipassana Pagoda Campus, Near Essel World, Gorai Village, Borivali-W, Mumbai - 400 091, Maharashtra, India. Phone: Office : 022-62427560 (9:30AM to 5:30PM), website: http://www.vridhamma.org

अतिरिक्त उत्तरदायित्त्व

1. Mr. Albert Chow , Hongkong . To assist center teacher of Dhamma Mutta, Hong Kong
2. Mr. Jason Heng-moh Lim, Singapore. To assist center teacher of Dhamma Mutta, Hong Kong

नये उत्तरदायित्त्व

वरिष्ठ सहायक आचार्य

1. श्रीमती बी. पद्मजा, हैदराबाद
2. श्री के. नरोथम रेड्डी, हैदराबाद

नव नियुक्तियां

बाल-शिविर शिक्षक

1. श्री बोधेन्द्र कुमार, अलीगढ़, उत्तर प्रदेश
2. श्री प्रेम कुमार शाक्य, एटा, उत्तर प्रदेश
3. श्री हरिराम अटल, छत्तीसगढ़
4. श्री रामन्ना राव, छत्तीसगढ़
5. श्री संदीप चौरे, छत्तीसगढ़
6. श्रीमती अभ्रदिता बोरकर, छत्तीसगढ़
7. कु. निधि फुलज़ेले, छत्तीसगढ़
8. श्रीमती गीता टौंक, छत्तीसगढ़
9. श्रीमती उषा धार्गावे, छत्तीसगढ़
10. कु. धरनी वैद्य, छत्तीसगढ़
11. श्रीमती अनिता लड्ढा, छत्तीसगढ़
12. Daw Win Win Than, Myanmar
13. U Htein Lin Zaw, Myanmar
14. Daw Htwe Htwe Myint, Myanmar
15. Ko Aye Win, Myanmar
16. Ko Yan Naing Min, Myanmar

Registered No. NSK/235/2015-2017

म्युजियम का ऐप- Dhamma Archives सक्रिय

गत पत्रिका में निवेदन किया गया था कि जिन साधकों के पास पूज्य गुरुजी से संबंधित फोटो, पत्राचार, प्रेरणाजनक घटनाएं, लेखादि हों, उन्हें हम तक अवश्य पहुँचायें। तदर्थ ऐप **'Dhamma Archives'** सक्रिय हो गया है। कृपया इसमें दिये गये निर्देशों का अनुसरण करें।

पत्राचार संपर्कः व्यवस्थापक, विपश्यना विशोधन विन्यास, आर्काइव्स कार्यालय, गोराई खाड़ी, बोरीवली (पश्चिम), मुंबई-400091. **ईमेल**-dhammaarchives@globalpagoda.org

पगोडा परिसर में धर्मसेवकों तथा साधकों के लिए निःशुल्क आवास-सुविधा की योजना

प्रत्येक वर्ष "विश्व विपश्यना पगोडा", गोराई- बोरीवली (मुंबई) में 'एक दिवसीय' महाशिविरों में शामिल होने के लिए आते हैं, परंतु दुर्भाग्य से वहां उनके रात्रि-विश्राम की कोई समुचित सुविधा नहीं है। अतः योजना है एक 3-4 मंजिला भवन का निर्माण करने की, जिसमें कुछ स्थायी धर्मसेवकों के अतिरिक्त दूर से आने वाले साधकों के लिए एकाकी और सामूहिक निवास की व्यवस्था की जाय। तदर्थ जो भी साधक-साधिका इस पुण्यकार्य में भागीदार होना चाहें, वे संपर्क करें:- 1. Mr. Derik Pegado, or 2. Sri Bipin Mehta, (details as in Archives Center). Email: audits@globalpagoda.org

पगोडा पर रात भर रोशनी का महत्त्व

पूज्य गुरुजी बार-बार कहा करते थे कि किसी धातु-पगोडा पर रात भर रोशनी रहने का अपना विशेष महत्त्व है। इससे सारा वातावरण धर्म एवं मैत्री-तरंगों से भरपूर रहता है। तदर्थ सगे-संबंधियों की याद में ग्लोबल पगोडा पर रोशनी-दान के लिए प्रति रात्रि रु. 5000/- निर्धारित किये गये हैं। अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें-- 1. Mr. Derik Pegado, 9921227057. or 2. Sri Bipin Mehta, Mo. 9920052156, Email: audits@globalpagoda.org

ग्लोबल विपश्यना पगोडा में एक-दिवसीय महाशिविर एवं वृहत् संघदान का आयोजन

रविवार, 14 जनवरी, 2018 पूज्य माताजी एवं सयाजी ऊ बा खिन की पुण्य-तिथि के उपलक्ष्य में-- **पगोडा** परिसर में प्रातः 10 बजे **वृहत्संघदान** का आयोजन किया जा रहा है। उसके बाद 11 बजे से साधक-साधिकाएं **एक दिवसीय महाशिविर** का लाभ ले सकेंगे। जो भी साधक-साधिका इस पुण्यवर्धक दान-कार्य में भाग लेना चाहते हों, वे कृपया निम्न नाम-पते पर संपर्क करें-- 1. Mr. Derik Pegado, 9921227057. or 2. Sri Bipin Mehta, Mo. 9920052156, फोन नं. 022-62427512 (9:30AM to 5:30PM), Email: audits@globalpagoda.org

एक दिवसीय महाशिविरः प्रातः 11 बजे से अपराह्न 4 बजे तक। - 3 से 4 बजे तक के प्रवचन में बिना साधना किये लोग भी बैठ सकते हैं। बुकिंग के लिए कृपया निम्न फोन नंबरों या ईमेल से शीघ्र संपर्क करें। कृपया बिना बुकिंग कराये न आयें और **समग्गानं तपो सुखो**- सामूहिक तप-सुख का लाभ उठाएं। **संपर्कः** 022-28451170, 022-62427544-Extn. no. 9, 82918 94644. (फोन बुकिंग- प्रतिदिन 11 से 5 बजे तक) Online Regn: www.oneday.globalpagoda.org

दोहे धर्म के

समय बड़ा बलवान है, समय न हाट बिकाय।
तीन लोक संपद दिये, बीता क्षण न पाय॥

क्षण-क्षण, क्षण-क्षण बीतते, जीवन बीता जाय।
क्षण-क्षण का उपयोग कर, बीता क्षण ना आय॥

बीते क्षण तो चल दिए, आने वाले दूर।
इस क्षण में जो भी जिये, वह ही सचमुच शूर॥

बीते क्षण को याद कर, मत बिरथा अकुलाय।
बीता धन तो मिल सके, बीता क्षण नहिं आय॥

केमिटो टेक्नोलॉजीज (प्रा0) लिमिटेड
8, मोहता भवन, ई-मोजेस रोड, वरली, मुंबई- 400 018
फोन: 2493 8893, फैक्स: 2493 6166
Email: arun@chemito.net
की मंगल कामनाओं सहित

दूहा धर्म रा

छण छण जाग्रत ही रवां, राखां दूर प्रमाद।
कुण जाणै कीं छण चढै, राग द्वेस उन्माद॥

जो अंतस रै मूळ तक, रैसी सजग सचेत।
मन रा दुखड़ा उखड़सी, पासी सुख अणमेत॥

बारै सुख नै खोजतां, भटक्यो तीनूं लोक।
अंतर मँह डुबकी लगी, निरमळ हुयो निसोक॥

बैठ पालथी मार कर, काया सीधी राख।
मौन मौन कर चित्त नै, चाख मुक्ति रस चाख॥

मोरया ट्रेडिंग कंपनी
सर्वो स्टॉकिस्ट-इंडियन ऑईल, 74, सुरेशदादा जैन शॉपिंग कॉम्प्लेक्स, एन.एच.6, अजिंठा चौक, जलगांव - 425 003, फोन. नं. 0257-2210372, 2212877
मोबा.09423187301, Email: morolium_jal@yahoo.co.in
की मंगल कामनाओं सहित

"विपश्यना विशोधन विन्यास" के लिए प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक: राम प्रताप यादव, धम्मगिरि, इगतपुरी- 422 403, दूरभाष :(02553) 244086, 244076·
मुद्रण स्थान : अपोलो प्रिंटिंग प्रेस, 259, सीकाफ लिमिटेड, 69 एम. आय. डी. सी, सातपुर, नाशिक-422 007. बुद्धवर्ष 2561, मार्गशीर्ष पूर्णिमा, 3 दिसंबर, 2017

वार्षिक शुल्क रु. 30/-, US $ 10, आजीवन शुल्क रु. 500/-, US $ 100. "विपश्यना" रजि. नं. 19156/71. Postal Regi. No. NSK/235/2015-2017

Posting day- **Purnima of Every Month,** Posted at **Igatpuri-422 403,** Dist. Nashik (M.S.)

DATE OF PRINTING: 15 November, 2017, DATE OF PUBLICATION: 3 December, 2017

If not delivered please return to:-
विपश्यना विशोधन विन्यास
धम्मगिरि, इगतपुरी - 422 403
जिला-नाशिक, महाराष्ट्र, भारत
फोन : (02553) 244076, 244086, 243712,
243238. फैक्स : (02553) 244176
Email: vri_admin@dhamma.net.in;
course booking: info@giri.dhamma.org
Website: www.vridhamma.org